ऊषा की लाली

रवि रजनी का मिलन मिटा,
मिट गयी क्षितिज काली रेखा।
परकीया निज प्रिय संग लखिके,
छिटकी ऊषा की लाली।।1।।
दहने लगा प्रबल इर्ष्यानल,
झुलसी हिय की हरियाली।
नैन बरसने लगे वदन पर,
मोती सी सीकर माली।।2।।
प्रिया प्रीति विपरीत रीति से,
द्विज व्याकुल चिन्ताषाली।
स्व सर्वस्व स्वकीया अर्पी,
सरस प्रणय नव नय पाली।।3।।
मिथुन सार अभिसार मिला जब,
श्वेत हुआ स्वर्णिम थाली।
पथ परिवेक्षणि निरखि निशा फिर,
उमड़ी ऊषा की लाली।।4।।